ISSN - 2231-1130
वर्ष–षष्ठम् ; सितम्बर–2015

अध्यापक शिक्षा : नियत, नीति और नियति

जितेन्द्र सिंह गोयल*

अध्यापक शिक्षा को मात्र आर्थिक औजार के तौर पर विकसित नहीं किया जा सकता, जिसका प्रमुख ध्येय नियोक्ता की आवश्यकता पूरी करने के लिए छात्रों को व्यवहारिक कुशलता से लैस करना हो, न ही हमारी अध्यापक शिक्षा का उददेश्य ऐसे शिक्षक पैदा करना होना चाहिए जो चीन से टक्कर ले सकें । जीवन के वृहत्तर मामलों पर गहन शोध की बजाय महज नौकरी के कुछ नुक्ते सिखाना भर दीर्घकाल में धातक सिद्ध हो सकता है। भारत को विकास के लिए ज्ञानार्जन के साथ–साथ उच्च शिक्षा के महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है। भारत की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर विचार करना समीचीन प्रतीत होता है परन्तु शिक्षा का क्षेत्र इतना व्यापक है कि कम समय व क्षमता के होते हुए शिक्षा जैसे विशद विषय के सभी पक्षों पर विचार करना कठिन प्रतीत होता है, परन्तु फिर भी यहाँ उस महत्वपूर्ण पक्ष पर विचार किया जाना संभव प्रतीत होता है जो कि शिक्षा के विकास की दिशा निर्धारित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है अथवा यदि कहा जाये कि शिक्षा रूपी भवन उसी पर खड़ा होता है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी, और वह महत्वपूर्ण पक्ष है – अध्यापक शिक्षा। किसी राष्ट्र में अध्यापक शिक्षा जैसी होती है, वहाँ शिक्षा भी वैसी ही होती है और फिर राष्ट्र का विकास भी उसी गति से होता है, यह सर्वविदित है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि अध्यापक शिक्षा की दिशा के दोनों पक्षों की उपर्युक्त समस्याओं का निराकरण कर समय की मांग के अनुसार कौशल आधारित मॉडल का निर्माण कर उसकी क्रियान्विति की सुनिश्चितता हेतु व्यूह रचना का निर्माण कर सुधार करने के प्रयास करने चाहिए ताकि राष्ट्र को योग्य शिक्षक उपलब्ध हो सकें एंव **सभी के लिये शिक्षा (Education for all)** की संकल्पनापूर्ण होने के साथ–साथ गुणवत्ता आधारित जीवनोपयोगी शिक्षा भी मिल सके एंव राष्ट्र भी तेजी से

* सीनियर रिसर्च स्कॉलर, (शिक्षा विभाग) लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

विकास पथ पर आगें बढ़ सके। भारत मे अध्यापक शिक्षा के निजीकरण की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। यह शिक्षा सुधार के समग्र कार्यक्रम का नतीजा न होकर सार्वजनिक क्षेत्र के धुआस्त होने का दुष्परिणाम है। यह ढर्रा परेशान करने वाला है, यह आशा की जाती है कि भारत इस पहलू पर ध्यान देगा और अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में धनराशि डालेगा।

1.1 प्रस्तावना –

''शिक्षा सिर्फ अक्षर ज्ञान के लिए नहीं हैं, बल्कि सशक्तिकरण का वह हथियार है, जो हमें समाज में बेहतर जीवन जीने के योग्य बनाती है। शिक्षा मानव को सुसंस्कृत तथा विवेकशील बनाने का माध्यम है, शिक्षा मानव का एक सच्चा आभूषण हैं तथा जनकल्याण का सशक्त माध्यम है। विद्यालय शिक्षा प्रसार के पावन मन्दिर होते हैं, जहॉ से ऐसा आलोक प्रसारित होता है, जो व्यष्ट्रि के साथ–साथ समष्टि को भी अभ्युदय और श्रेयस की ओर उन्मुख करता है। शिक्षा सर्वात्मना हमारे श्रेय और प्रेय का साधन है। शिक्षा का अर्थ है –सीखना। ज्ञान सीमातीत होता हैं, उसकी कहीं इति नहीं।

शिक्षक शिक्षा जगत का एक अमूल्य घटक है, जिसके आदर्श और शिक्षाओं का विद्यार्थियों के जीवन पर व्यापक एवं सशक्त प्रभाव पड़ता है। माता–पिता से प्राप्त दुर्लभ जीवन गुरु के बिना संस्कारित नहीं होता है। ब्रह्मा और शिव के समान हो जाने पर भी गुरु के बिना इस संसार रूपी सागर को पार कर पाना अत्यन्त कठिन है। गुरु आत्मसाक्षात्कार कराता है। सत्कर्म और श्रम की आग में तपाकर गुरु पारस बनाकर कुन्दन बनाता है। गुरु और ईश्वर में कोई भेद नहीं है। गुरू चरण के नख की ज्योति मणि समान है जिनके स्मरण से हृदय में दिव्य दृष्टि उत्पन्न होती है। गुरु हमारे जीवन को परिष्कृत एवं परिमार्जित करता है।

यद्यपिद्यीता निगमाः वाडंगा आगमाः प्रिये।
अध्यात्मादिनि भाास्त्राणि ज्ञानं नास्ति गुरूं बिना।।
(गुरू गीता ,श्लोक 98)

मनुष्य चाहे चारों वेद पढ़ ले ,वेद के छहः अंग पढ़ ले, अध्यात्मशास्त्र आदि अन्य सर्वशास्त्र पढ़ ले, फिर भी गुरु के बिना ज्ञान नहीं मिलता। अध्यापन के व्यवसाय को राष्ट्र निर्माण के कार्य से जोड़कर इसे विशेष महत्व दिया गया है क्यो कि अध्यापक ही भावी नागरिकों के चरित्र का निर्माता, मानवीय मूल्यों का निर्धारक और अनुशासन का स्तम्भ होता हैं। समाज में शिक्षक ही एक मात्र ऐसा व्यक्ति है जो अपना कार्यनियन्ता, क्रियान्वयक और मूल्यांकनकर्ता भी है।

समाज में जब भी परिवर्तन आता है। शिक्षा के साथ शिक्षक की भूमिका में भी परिवर्तन आता है। बच्चों की शिक्षा –दीक्षा में गुरु की महत्ता तो निर्विवाद रूप से रही है। प्रत्येक काल में यह महत्ता मौजूद थी, इस महत्ता में यदि फर्क पड़ा है तो वह इस भूमिका के निर्वाह को लेकर ही पड़ा है, कि कितनी बुद्धिमता और दूरदर्शिता से शिक्षकों ने इसे निभाया है। समय की गति कितनी ही तीव्र क्यों न हो जाये, शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका को नकार पाना असम्भव होगा।

डॉ0 सयैदीन ने एक अध्यापक की महत्ता को बताते हुए कहा है ''यदि आप किसी देश की जनता के सांस्कृतिक स्तर को मापना चाहते हैं तो इसका अच्छा तरीका यह कि आप मालूम करें कि उस समाज में अध्यापकों की सामाजिक स्थिति क्या है तथा उन्हे कितनी सामाजिक प्रतिश्ठा प्राप्त है।''

शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी को केन्द्र में रखने की आवश्यकता को रेखाकिंत करने के बावजूद रबीन्द्रनाथ टैगोर ने गुरु की भूमिका और महत्ता पर विशेष बल दिया हैं। उन्होने इस सन्दर्भ में गुरु को शिक्षक से अलग करके देखा है –''प्रारम्भ में ही ज्ञान शिक्षा का आश्रम स्थापित करने के लिए गुरु की आवश्यकता पड़ती है, शिक्षक तो समाचार पत्रों में विज्ञापन देते ही दौड़ पड़ते है, पर गुरू तो फरमाईश करने पर भी नहीं पाए जा सकते'' किसी भी राष्ट्र का हित उसके अध्यापक के हित पर निर्भर है अध्यापक ही हमारे भविष्य का संरक्षक हैं। अध्यापक बनाने के कारखाने नहीं बनाये जा सकते हैं। अध्यापन एक कला है। उस कला में निपुणता प्राप्त करने के लिए पहली आवश्यकता

कुछ उन गुणों की हैं, जिन्हें जन्मजात गुण कहा जाता है, जिस व्यक्ति में ये गुण होते हैं, वह उतना ही दक्ष होता है। इसके लिए आवश्यकता है कि अध्यापक शिक्षा की व्यवस्था की जाये क्यों कि जन्मजात शिक्षक उतनी संख्या में उपलब्ध नहीं हो पाते जितने कि चाहिये।

1.2 भारत में अध्यापक शिक्षा का उद्भव एवं विकास–

1.2.1 वैदिक काल में अध्यापक शिक्षा–

वैदिक काल में जिस प्रकार अन्य व्यवसायों के लिए प्रशिक्षण दिया जाता था , उस प्रकार अध्यापक कार्य के लिए किसी भी प्रकार के प्रशिक्षण की व्यवस्था नहीं थी। वैदिक काल में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली प्रचलित थी । गुरूकुलों में शिक्षा देने का कार्य न केवल ब्राह्मण शिक्षा करते थे बल्कि अब्राह्मण आचार्य भी शिक्षा प्रदान किया करते थे । ऋग्वेद प्रतिशाखा में अध्यापक बनना चाहता है तो उसको प्रथम तो स्वीकृत पाठ्यक्रम का भली प्रकार से अध्ययन करना चाहिये और दूसरे ब्रह्मचर्य आश्रम में रहकर ब्रह्मचारी के सब नियमों का पालन करना चाहिये।''

वैदिक काल में अध्यापकों के लिए उनका ज्ञान, आचरण और अनुभव ही शिक्षक बनने के लिए पर्याप्त था। पच्चीस वर्ष होजाने पर जो छात्र गृहस्थ आश्रम बिताने के लिए अपने घरों को नहीं जाना चाहते थे वे आश्रम में ही रूक जाते थे और शिष्यों को शिक्षा प्रदान करते थे। वैदिक काल में ब्राह्मण परिवारों में वंशानुक्रम से ही शिक्षण कार्य होता था तथा अध्यापक स्वप्रयास तथा स्वअनुभव से अध्यापन कला में दक्ष हो जाता था।

1.2.2 बौद्धकाल में अध्यापक शिक्षा –

बौद्धकाल में जाति विहीन समाज था जब कि हिन्दू धर्म में जाति भेद व्याप्त था। हर व्यक्ति को भिक्षुक बनाने का अधिकार था। बौद्धकालीन शिक्षा व्यवस्था में नैतिकता तथा अनुशासन जैसे गुणों पर अत्याधिक बल दिया जाता था। बौद्धकालीन शिक्षा व्यवस्था में **पबज्जा तथा उपसम्पदा** संस्कार प्रचलन में थे। वरिष्ठता एवं श्रेष्ठता के आधार पर आचार्य एवं उपाध्याय

स्तरीय योग्यता प्राप्त कर लेने के पश्चात भिक्षुओं को अध्यापन का अधिकारी समझा जाता था। बौद्ध संघों में वरिष्ठ एवं श्रेष्ठ छात्र ही आचार्यो एवं उपाध्यायों की अध्ययन –अध्यापन में सहायता किया करते थे। इन्हें पित्तिचार्य अथवा सहायक शिक्षक कहा जाता था यही अग्र शिष्य प्रणाली (मोनोटोरियल सिस्टम) औपचारिक शिक्षा के रूप में मानी गयी। बौद्ध कालीन शिक्षा व्यवस्था में ही अध्यापक शिक्षा की औपचारिक रूपरेखा का शुभारम्भ हुआ।

1.2.3. मुस्लिम काल में अध्यापक शिक्षा –

मुस्लिम काल में शिक्षा मकतब एवं मदरसों में दी जाती थी मकतब एवं मदरसों में मौलवी लोग कुरान की शिक्षा प्रदान करते थे इस्लाम धर्म के मदरसों में अरबी भाषा की शिक्षा देने के लिए मौलवियों की नियुक्ति की जाती थी। यदि ऐसे शिक्षक देश में उपलब्ध नहीं होते थे तो उन्हें अरब से शिक्षा देने के लिए बुलाया जाता था। मुस्लिम कालीन शिक्षा व्यवस्था में किसी भी पद पर नियुक्त होने के लिए अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता नहीं थी, लेकिन मुस्लिम विचारधारा का ज्ञान होना आवश्यक था और न ही मुस्लिम शासकों द्वारा किसी भी प्रकार के शिक्षक –प्रशिक्षण की व्यवस्था नहीं की गयी थी। इस काल में किसी भी मुगल सम्राट ने अध्यापक शिक्षा की तरफ ध्यान नहीं दिया। इस काल में अध्यापन कार्य सामान्य तौर पर वंश परम्परागत हो गया इसलिए अलग से अध्यापक शिक्षा का प्रश्न नहीं उठा।

1.2.4. अंग्रेजी भाासन व्यवस्था में अध्यापक शिक्षा –

अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था में अध्यापकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था की गयी थी। अंग्रेजी शासन काल में सन 1801 से 1882 तक गैर सरकारी संगठनों द्वारा शिक्षक प्रशिक्षण के लिए सराहनीय कार्य किये गये।

1. सर्वप्रथम डेनिस मिशनरी पादरियों ने अपने विद्यालयों के शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए सन 1716ई0 में ट्रानक्यूवर में शिक्षक –प्रशिक्षण के लियें नार्मल स्कूल की स्थापना की।

2. बम्बई की देशी शिक्षा परिषद ने सन 1815 में 24 शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया और उन शिक्षको को प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षण स्तर को ऊँचा उठाने के लिए भारत के राज्यों के विभिन्न भागों में प्रबन्धकों के रूप में भेजा।

3. सन् 1826 में मद्रास के गवर्नर सर टामस मुनरो के प्रस्ताव के अनुसार मद्रास नगर के शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए केन्द्रीय स्कूल की स्थापना की गयी।

4. ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने बम्बई में प्रशिक्षण विद्यालय की स्थापना की तथा बंगाल के विभिन्न भागों में नार्मल स्कूलों की स्थापना की।

5. सन 1854 के वुड के घोशणा पत्र द्वारा कम्पनी के संचालकों ने यह इच्छा व्यक्ति की कि इग्लैंण्ड की तरह भारत के प्रत्येक प्रान्त में अतिशीघ्र प्रशिक्षण विद्यालय स्थापित किये जाये तथा प्रशिक्षण के लिए छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जायें।

6. भारतीय शिक्षा आयोग (1882)ने सी शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थाओं में गुणवत्ता लाने के लिए परीक्षा पर बल दिया तथा यह सिफारिश की कि स्नातकों तथा गैर स्नातकों के लिए अलग–अलग प्रशिक्षण संस्थायें स्थापित की जायें ।

7. वीसवीं शताब्दी में लार्ड कर्जन ने अध्यापक शिक्षा में सुधार की आवश्यकता पर बल देते हुये कहाँ यदि विद्यालयी शिक्षा को अधिक प्रभावशाली बनाना है तो अध्यापकों को पूर्व प्रशिक्षित होना चाहिये।''

8. हर्टांग कमेटी (1929) ने शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सिफारिशे प्रस्तुत कीं। हर्टांग कमेटी ने स्नातक स्तर के प्रशिक्षण के लिये एल0टी0 इण्टर स्तर के लिए सी0टी0 तथा प्राइमरी स्तर के लिये एच0टी0सी0 पाठ्क्रम का सुझाव प्रस्तुत किया था।

1.3 भारत में अध्यापक शिक्षा के विकास के चरण–

भारत में अध्यापक शिक्षा का विकास निम्न चरणों में हुआ।

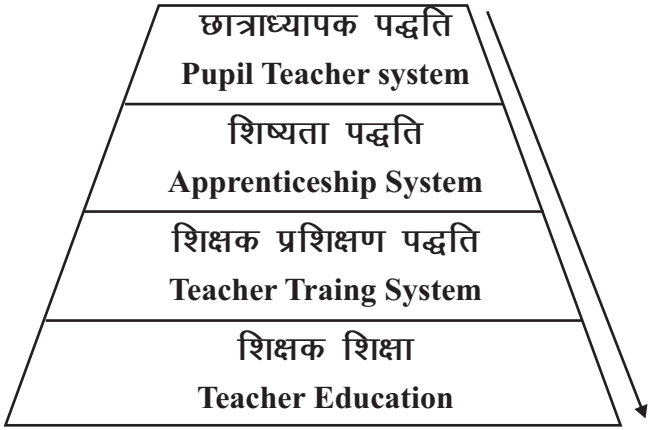

1.4 स्वतन्त्रता प्राप्ति में अध्यापक शिक्षा :–

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भारत सरकार ने शिक्षा के सम्बन्ध में विचार करने के लिए तथा सरकार को सुझाव देने के लिए 1948 में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग, सन 1952 में माध्यमिक शिक्षा आयोग और सन् 1964 में शिक्षा आयोग गठित किये तथा सन् 1968 व 1979 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति तथा सन् 1986 में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनायी जिसमें अध्यापक शिक्षा के सम्बन्ध में अनेक सुझाव प्रस्तुत कियें।

1.5 अध्यापक शिक्षा की समस्याएँ –

अध्यापक शिक्षा की प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित हैं।

1. प्रवेश सम्बन्धी समस्या
2. पाठ्यक्रम उपयुक्त नहीं, सैद्धान्तिक पक्ष पर विशेष बल।
3. परीक्षा प्रणाली उपयुक्त नहीं
4. अच्छे उपयोगी शोध कार्य की कमी
5. अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रम के नियोजन की समस्या
6. प्रशिक्षणियों का नकारात्मक दृष्टिकोण
7. प्रशिक्षित प्राध्यापकों की समस्या

8. पठनीय सामग्रियों की समस्या

9. बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर का अभाव

1.6 अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता के लिये किये जा रहे प्रयास –

1. 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत हर जिले में जिला एवं प्रशिक्षण संस्थान खोलने की व्यवस्था की गयी।

2. अध्यापक शिक्षा महाविद्यालयों को सुदृढ़ करने हेतु, शिक्षा में उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान की स्थापना की गयी।

3. प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्य करने वाले अध्यापकों के लिए एकेडमिक स्टाफ कालेजों में अभिविन्यास कार्यक्रम तथा पुनश्चर्या कार्यक्रम की व्यवस्था की गयी।

4. अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद की स्थापना की गयी।

1.7 वर्तमान में अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिये किये जा रहे प्रयास–

1. वर्तमान में बी0एड0 तथा एम0एड0 पाठ्यक्रम की अवधि को 1 वर्ष से बढ़ाकर दो वर्ष कर दिया गया।

2. जस्टिस वर्मा कमेटी ने अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता बढाने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिये।

3. भारत सरकार ने भी अध्यापक शिक्षा में सुधार लाने के लिए **मदन मोहन मालवीय शिक्षक प्रशिक्षण मिशन** की शुरूआत की।

4. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद ने भी पारदर्शिता लाने के लिये **टोल फ्री न0** जारी किया।

5- शिक्षक प्रशिक्षण कोर्सो में प्रवेश में एकरूपता लायी जाये, सभी शिक्षक प्रशिक्षण कोर्सो में एक ही प्रवेश परीक्षा से प्रवेश दिया जाये।

6- शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में टीचर एजुकेटर की नियुक्ति के लिये

एक समान अर्हता हो।

7- प्रत्येक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में **एक प्रयोगात्मक विद्यालय** सम्बद्ध कर दिया जाये।

8- शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में आपदा प्रबन्ध विषय को जोड दिया जाये।

9- राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, टीचर एजुकेटरों की समस्याओं के निवारण के लिये भी एक टोल फ्री नम्बर जारी करे।

10- अध्यापक शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई0सी0टी0) के प्रयोग पर बल दिया जाये।

11– अध्यापक शिक्षा में शोध को बढ़ावा देने के लिये फैलोशिप की व्यवस्था की जाये।

1.8 निष्कर्ष–

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्यापक शिक्षा का निजीकरण एवं व्यावसायीकरण बड़ी तेजी से हुआ है, कुकरमुत्तों की तरह उगते गुणवत्ताविहीन बी. एड. कालेजों तथा अन्य व्यावसायिक संस्थानों ने शिक्षा को कितना मँहगा कर दिया है ?यह सबके सामने है। **अध्यापक शिक्षा**की गुणवत्ता में तभी सुधार सम्भव होगा जब शिक्षण और अनुसंधान की वर्तमान प्रणालियों के स्थान पर स्वीकृत और उपयोगी प्रणालियों को अपनाया जाए, अभी भी भारत के महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में अनुभवी अच्छे शिक्षकों, उच्चस्तरीय पुस्तकालयों और अच्छी प्रयोगशालाओं का नितांत अभाव है। आगामी पाँच वर्षो की अवधि में व्यापक गुणात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है, परन्तु इसके लिए आवश्यक है कि इंटरनेट और वेब आधारित सभी आधुनिक तकनीकों का प्रयोग किया जाए। दरअसल यह तथ्यात्मक तथ्य है कि डिजिटल और वेब आधारित माध्यमों को अपनाकर तथा सदुपयोग करके देश के सभी विश्वविद्यालयो में गुणात्मक सुधार हो सकते हैं।

सन्दर्भ –

1. बनर्जी, शुभंकर. प्रतियोगिता दर्पण. भारत की उच्च शिक्षा को विश्वस्तरीय बनाने की चुनौती. अक्टूवर 2011. पृश्ठ संख्या 518
2. दुवे, सत्यनारायण.(2009). अध्यापक शिक्षा. इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन.
3. गुप्ता. अरूण, (2008). उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक. इलाहाबाद : आलोक प्रकाशन.
4. **गोयलजितेन्द्र सिंह और सुनीताचौधरी** (2014).**वर्तमान परिदृश्य अध्यापक शिक्षा के समक्ष चुनौतियाँ**. जर्नल ऑफ सोशियो इकोनोमिक रिव्यू. मेरठ, अंक–2 (अप्रैल–2014), पृ.सं. 129–133.
5. कुलश्रेश्ठ,रजनी. (2015). शिक्षण–शिक्षा में मूल्य शिक्षा की प्रासिंगकता. शिक्षामित्र, 7(4), 24–25.
6. लोढ़ा, जितेन्द्र. नयीसदी की चुनौतियाँ और अध्यापक शिक्षा . **भारतीय आधुनिक शिक्षा**, त्रैमासिक जर्नल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली, वर्ष–34, अंक–2 (अक्टूबर–2013), पृ.सं. 16–22.
7. पांडे, रामशकल और करूणाशंकर मिश्र. (2005).भारतीय शिक्षा की समसामायिक समस्यायें. आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर.
8. राजपूत, जगमोहन सिंह (2002). भारत के अध्यापक सशक्त एवं गतिशील परम्परा के उत्तराधिकारी. **भारतीय आधुनिक शिक्षा**, त्रैमासिक जर्नल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली, वर्ष–21, अंक–2 (अक्टूबर–2002), पृ.सं. 3–6.
9. त्यागी, गुरूसरन दास (2003). भारतीय शिक्षा का परिदृश्य. आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर.
10. विशिष्ट, विजेन्द्र कुमार. (2003). भारतीय शिक्षा का इतिहास. नई दिल्ली : अर्जुन पब्लिशिंग हाउस।